• रास्ते में...

पैसे मिलना

अक्सर राह चलते हुए अचानक सड़क पर पड़े सिक्के या नोट नजर आ जाते हैं. ऐसे समय पर मन में सबसे पहला सवाल यही आता है कि क्या इन पैसों को उठाना चाहिए? अगर उठा भी लिया, तो क्या इन्हें खर्च करना सही रहेगा या इससे कोई दोष लगेगा। ज्योतिष और वास्तु शास्त्र में रास्ते में मिले धन को लेकर कई खास बातें और संकेत बताए गए हैं। आइए जानते हैं कि यह घटना आपके जीवन के लिए शुभ है या अशुभ, और इन पैसों का सही इस्तेमाल कैसे किया जाना चाहिए।

ज्योतिष और वास्तु से जुड़ी मान्यताओं के अनुसार, रास्ते में पैसे मिलना सामान्य तौर पर शुभ संकेत माना जाता है. ऐसा माना जाता है कि अचानक धन मिलना व्यक्ति के जीवन में आने वाले किसी सकारात्मक बदलाव की ओर इशारा कर सकता है। कुछ मान्यताओं में इसे मां लक्ष्मी की कृपा से भी जोड़कर देखा जाता है। वहीं, कुछ धार्मिक मान्यताओं के अनुसार रास्ते में मिला धन पितरों के आशीर्वाद का संकेत भी माना जाता है। खासकर तब, जब पैसा किसी सामान्य और साफ जगह पर पड़ा हुआ मिले और उसके आसपास किसी तरह की नकारात्मक परिस्थिति न हो।

▸ धार्मिक और लोक मान्यताओं में कुछ जगहों पर पड़े पैसे को उठाने से बचने की सलाह दी जाती है। अगर पैसा सुनसान जगह, चौराहे, श्मशान घाट या किसी गंदी जगह पर पड़ा मिले तो उसे उठाने से बचना चाहिए. ऐसी जगहों से मिले धन को कुछ मान्यताओं में नकारात्मक ऊर्जा या तांत्रिक क्रियाओं से जोड़कर देखा जाता है।

▸ अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि अगर रास्ते में पैसे मिल जाएं तो क्या उन्हें अपने खर्च में इस्तेमाल करना चाहिए? धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मिले हुए धन को सामान्य कमाई की तरह तुरंत खर्च करना सही नहीं माना जाता। कई लोग ऐसे धन को पहले अलग रख देते हैं और बाद में उसका कुछ हिस्सा मंदिर में चढ़ाते हैं या जरूरतमंद व्यक्ति को दान कर देते हैं। ऐसा माना जाता है कि इससे धन का सही उपयोग होता है और व्यक्ति के मन में भी संतोष रहता है।

▸ कुछ लोग रास्ते में मिले सिक्के या रुपए को साफ करके अपनी तिजोरी में रखते हैं। इसके पीछे मान्यता है कि अचानक मिला धन घर में आर्थिक समृद्धि और बरकत का संकेत हो सकता है।

▸ ज्योतिष और धार्मिक मान्यताओं में अचानक धन मिलना कभी-कभी आने वाले धन लाभ से जोड़कर देखा जाता है। माना जाता है कि व्यक्ति के जीवन में आर्थिक अवसर बढ़ सकते हैं या रुका हुआ कोई काम आगे बढ़ सकता है।

• पूजा में...

तांबे का महत्व

ज्योतिष शास्त्र में तांबे को सूर्य और मंगल से संबंधित धातु माना जाता है। सूर्य को आत्मविश्वास, मान-सम्मान, नेतृत्व और पिता का कारक माना जाता है, जबकि मंगल को साहस, पराक्रम, ऊर्जा और उत्साह से जोड़ा जाता है। इसी वजह से तांबे का इस्तेमाल इन

ग्रहों से जुड़ी सकारात्मक ऊर्जा को मजबूत करने के उपाय के तौर पर बताया जाता है। तांबा हमारे रोजमर्रा के जीवन में इस्तेमाल होने वाली प्रमुख धातुओं में से भी एक है। पुराने समय से ही तांबे के बर्तन, पूजा की वस्तुएं और आभूषण इस्तेमाल किए जाते रहे हैं। आइए जानते हैं, ज्योतिष शास्त्र में तांबे को इतना विशेष महत्व क्यों दिया गया है।

▸▸ तांबे का सूर्य ग्रह से क्या संबंध है

ज्योतिष में सूर्य को ग्रहों का राजा कहा जाता है। सूर्य व्यक्ति के आत्मविश्वास, प्रतिष्ठा, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक प्रभाव का प्रतिनिधित्व करता है। तांबे को सूर्य की धातु माना जाता है। इसी मान्यता के कारण कुंडली में सूर्य को मजबूत करने के लिए तांबे से जुड़े उपाय बताए जाते हैं। कई लोग सुबह सूर्य देव को तांबे के लोटे से जल अर्पित करते हैं। धार्मिक मान्यता है कि इससे सूर्य देव प्रसन्न होते हैं और व्यक्ति को आत्मविश्वास व मान-सम्मान का आशीर्वाद मिलता है।

▸▸ मंगल से भी जुड़ा है तांबा

तांबे का संबंध ज्योतिष में मंगल ग्रह से भी बताया जाता है. मंगल को साहस, शक्ति, पराक्रम और ऊर्जा का कारक माना जाता है। ऐसे में तांबे को मंगल की ऊर्जा से भी जोड़कर देखा जाता है। ज्योतिषीय मान्यता के अनुसार, जिन लोगों की कुंडली में मंगल कमजोर हो, उनके लिए तांबे से जुड़े कुछ उपाय बताए जाते हैं।

▸▸ तांबे का कड़ा पहनने की क्यों है परंपरा?

तांबे का कड़ा पहनना कई लोगों के लिए धार्मिक और पारंपरिक आस्था से जुड़ा हुआ है। ज्योतिष में इसे सूर्य और मंगल से संबंधित माना जाता है। इसलिए मान्यता है कि तांबे का कड़ा पहनने से व्यक्ति में आत्मविश्वास, साहस और ऊर्जा बढ़ सकती है। कुछ लोग इसे नकारात्मकता से बचाव और सकारात्मक सोच से भी जोड़ते हैं।

▸▸ पूजा में तांबे का इस्तेमाल क्यों होता है?

हिंदू धर्म में पूजा-पाठ के दौरान तांबे के कलश, लोटे, दीपक और दूसरी पूजा सामग्री का इस्तेमाल लंबे समय से होता आया है। तांबे को शुद्ध और पवित्र धातु माना जाता है। भगवान सूर्य को जल अर्पित करने के लिए तांबे के लोटे का इस्तेमाल विशेष रूप से प्रचलित है। इसी तरह कई धार्मिक अनुष्ठानों में तांबे के कलश की स्थापना भी की जाती है।

▸▸ तांबे से जुड़े ज्योतिषीय उपाय क्यों किए जाते हैं?

ज्योतिष में ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए अलग-अलग धातुओं, रत्नों और वस्तुओं के इस्तेमाल की परंपरा है। इसी क्रम में तांबे को सूर्य और मंगल से जोड़कर देखा जाता है। मान्यता है कि तांबे का इस्तेमाल करने से सूर्य और मंगल से संबंधित सकारात्मक गुणों को बढ़ावा मिल सकता है। यही कारण है कि तांबे के बर्तन में जल अर्पित करना, तांबे का कड़ा पहनना और पूजा में तांबे की सामग्री का इस्तेमाल ज्यादा किया जाता है।

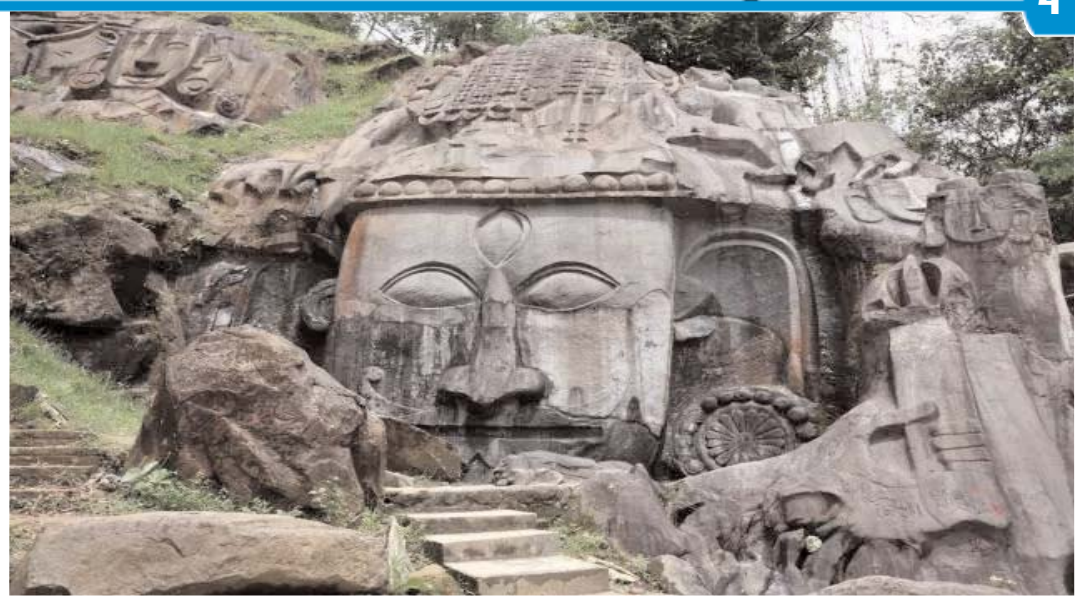

त्रिपुरा के उनाकोटी की मूर्तियों का रहस्य

घने जंगलों और पहाड़ियों के बीच मौजूद इस स्थान पर चट्टानों को काटकर देवी-देवताओं की विशाल मूर्तियां बनाई गई हैं। सबसे हैरान करने वाली बात ये है कि यहां मूर्तियों की संख्या 99 लाख 99 हजार 999 बताई जाती है, यानी एक करोड़ से सिर्फ एक कम। उनाकोटी को लेकर आज भी कई सवाल हैं। आखिर इतनी बड़ी संख्या में मूर्तियां किसने बनाई? इन्हें बनाने में कितना समय लगा होगा?

भारत में ऐसे कई रहस्यमयी स्थान और प्राचीन मंदिर हैं, जिनके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। इन जगहों से जुड़ी कहानियां और मान्यताएं आज भी लोगों को हैरान करती हैं। ऐसी ही एक रहस्यमयी जगह त्रिपुरा का उनाकोटी है। घने जंगलों और पहाड़ियों के बीच मौजूद इस स्थान पर चट्टानों को काटकर देवी-देवताओं की विशाल मूर्तियां बनाई गई हैं। सबसे हैरान करने वाली बात ये है कि यहां मूर्तियों की संख्या 99 लाख 99 हजार 999 बताई जाती है, यानी एक करोड़ से सिर्फ एक कम। उनाकोटी को लेकर आज भी कई सवाल हैं। आखिर इतनी बड़ी संख्या में मूर्तियां किसने बनाई? इन्हें बनाने में कितना समय लगा होगा? और सबसे बड़ा सवाल ये कि इन मूर्तियों की संख्या एक करोड़ से एक कम ही क्यों है? इन सवालों का कोई पक्का जवाब नहीं है। यही वजह है कि उनाकोटी को लेकर कई पौराणिक कथाएं और स्थानीय मान्यताएं प्रचलित हैं।

● **7वीं से 9वीं शताब्दी का है उनाकोटी :** त्रिपुरा का उनाकोटी एक प्राचीन शैव तीर्थस्थल है, जहां पहाड़ों और चट्टानों को काटकर देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाई गई हैं। इसे करीब 7वीं से 9वीं शताब्दी का माना जाता है। ये पूरा क्षेत्र लगभग 150 एकड़ में फैला हुआ है और यहां की विशाल शैल नक्काशियां इसकी सबसे बड़ी खासियत हैं। उनाकोटी को कई लोग 'पूर्व का अंगकोर वाट' भी कहते हैं। यहां भगवान शिव की विशाल प्रतिमा, जिसे उनाकोटीश्वर काल भैरव के नाम से जाना जाता है, प्रमुख आकर्षण है। ये प्रतिमा करीब 30 फीट ऊंची बताई जाती है। इसके अलावा पहाड़ियों पर गणेश, विष्णु, नंदी, दुर्गा, लक्ष्मी और अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमाएं भी उकेरी गई हैं। यहां रावण की एक प्रतिमा भी देखने को मिलती है।

● **भगवान शिव ने दिया था श्राप? :** उनाकोटी से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध कथा भगवान शिव और देवी-देवताओं से संबंधित है। धार्मिक मान्यता है कि एक बार भगवान शिव एक करोड़ देवी-देवताओं के साथ काशी यानी वाराणसी जा रहे थे। रास्ते में रात हो गई और सभी देवी-देवताओं ने रघुनंदन पहाड़ पर विश्राम करने का फैसला किया। उस समय उनाकोटी को रघुनंदन पहाड़ के नाम से जाना जाता था। महादेव ने सभी से कहा कि रात में आराम करने के बाद सुबह होते ही काशी के लिए रवाना होना है। लेकिन अगली सुबह केवल भगवान शिव ही जाग पाए। बाकी सभी देवी-देवता सोते रह गए। कहा जाता है कि इससे भगवान शिव नाराज हो गए और अकेले ही काशी की ओर निकल पड़े। जो देवी-देवता नहीं जाग सके, वो पत्थर में बदल गए। इसी मान्यता के कारण यहां एक करोड़ से एक कम यानी 99 लाख 99 हजार 999 मूर्तियां होने की बात कही जाती है।

● **कल्लू कुमार से जुड़ी कहानी :** उनाकोटी से जुड़ी एक दूसरी कहानी भगवान विश्वकर्मा के बेटे कल्लू कुमार की है। स्थानीय लोगों के बीच प्रचलित मान्यता के अनुसार, कल्लू कुमार भगवान शिव और माता पार्वती के साथ कैलाश जाना चाहते थे, लेकिन भगवान शिव उन्हें अपने साथ ले जाने के लिए तैयार नहीं थे। इसके बाद महादेव ने उनके सामने एक शर्त रखी। उन्होंने कहा कि अगर कल्लू कुमार एक ही रात में एक करोड़ देवी-देवताओं की मूर्तियां बना देते हैं, तो वो उन्हें अपने साथ कैलाश ले जाएंगे। कल्लू कुमार ने चुनौती स्वीकार कर ली और पूरी रात मूर्तियां बनाने में जुटे रहे। उन्होंने रातभर मेहनत करके लगभग एक करोड़ मूर्तियां तैयार कर दीं, लेकिन सुबह जब मूर्तियों की गिनती की गई तो एक मूर्ति कम निकली। यानी संख्या 99 लाख 99 हजार 999 ही रही। इस वजह से कल्लू कुमार कैलाश नहीं जा सके। इसी वजह से इस स्थान का नाम 'उनाकोटी' पड़ा। 'उनाकोटी' का मतलब होता है एक करोड़ से एक कम।

● **पहाड़ियों पर बसा मूर्तियों का रहस्यमयी संसार :** उनाकोटी की पूरी घाटी किसी विशाल मंदिर जैसी नजर आती है। पहाड़ियों पर जहां तक नजर जाती है, चट्टानों पर उकेरी गई प्राचीन आकृतियां और मूर्तियां दिखाई देती हैं। बड़ी प्रतिमाओं के साथ यहां कई छोटी और अलग-अलग मूर्तियां भी मौजूद हैं। ये इलाका घने जंगलों और पहाड़ियों के बीच बसा हुआ है और काफी दुर्गम माना जाता है।

● **सीता कुंड भी है खास :** उनाकोटी के पास सीता कुंड भी मौजूद है, जहां से जल की धारा निकलती है। धार्मिक मान्यता है कि इस कुंड में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

● **यूनेस्को की लिस्ट में शामिल उनाकोटी :** उनाकोटी की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अहमियत को देखते हुए इसे यूनेस्को की अस्थायी सूची में भी शामिल किया गया है. हर साल यहां अशोक अष्टमी के अवसर पर बड़ा मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।

■ पं. नित्यानंद

• वास्तु...

सेकंड हैंड सामान

मान्यता है कि किसी व्यक्ति के घर में इस्तेमाल की गई वस्तु वहां के वातावरण, परिस्थितियों और लोगों की ऊर्जा को लंबे समय तक ग्रहण कर सकती है। जब वही सामान दूसरे घर में पहुंचता है तो उसके साथ उस जगह की ऊर्जा भी साथ में आ सकती है। इसी वजह से वास्तु में सेकंड हैंड सामान को सीधे घर में रखने के बजाय पहले उसकी अच्छी तरह सफाई और शुद्धि करने की सलाह देते हैं। अगर किसी जरूरत या मजबूरी के कारण पुरानी चीज खरीदकर घर ला रहे हैं तो उसे तुरंत घर के मेन हिस्से में रखने से पहले अच्छी तरह साफ कर लें। खासकर अगर वह फर्नीचर, गद्दा, सोफा या कोई ऐसी चीज हो जो लंबे समय तक इस्तेमाल की जाती हो। वास्तु के अनुसार, सामान की शुद्धि के लिए गंगाजल का छिड़काव किया जा सकता है। कई लोग धूप या कपूर दिखाकर भी सामानों की शुद्धि करते हैं। ऐसा करने के पीछे मान्यता है कि इससे पुरानी नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है।

• दीपक जलाने की परंपरा...

पितृपक्ष को पूर्वजों को याद करने और उनके लिए श्राद्ध, तर्पण और दान करने का विशेष समय माना जाता है। इस दौरान लोग अपने पितरों की आत्मा की शांति के लिए धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। मान्यता है कि पितृ पक्ष में पीपल के पेड़ के नीचे दीपक जलाने से पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है। दीपक जलाते समय परिवार के दिवंगत सदस्यों का याद किया जाता है और उनकी शांति के लिए प्रार्थना की जाती है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित